सरगम 2

पाठ 1. सुबह

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में रचनात्मक विचार संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे चीज़ों व घटनाओं को देखने और करने का अभिनव तरीका अपना सकें। सोहनलाल द्विवेदी जी की यह कविता बहुत लोकप्रिय है। इसमें सुबह के समय के सौंदर्य का मनोहर चित्रण किया गया है।

पाठ का सार

एक माँ अपने बच्चे को नींद से जगाने के लिए चेष्टा कर रही है। वह बताती है कि दिन निकलने पर कमल खिलने लगे हैं तथा उनके ऊपर भँवरे मँडराने लगे हैं। ठंडी-ठंडी हवा बह रही है तथा आकाश में लाली छा गई है। जल में सूरज की सुनहरी किरणें दिखाई दे रही हैं। अत: अब तुम उठ जाओ तथा दैनिक कार्यों में लग जाओ।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  बच्चों से कविता का मुखर, एकल व सामूहिक वाचन करवाएँ। कविता वाचन में लय, आरोह-अवरोह, उच्चारण, आदि पर विशेष ध्यान दें। कविता के पठन-पाठन के क्रम में प्रात:काल के दृश्य का रोचक वर्णन प्रस्तुत करें। समय से जागने के लाभों के बारे में चर्चा अवश्य करें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों** व **पहेलियों** के उत्तर देने का अवसर अधिक से अधिक बच्चों को मिले, यह अवश्य सुनिश्चित करें। अशुद्ध उत्तरों की दशा में अन्य बच्चों से शुद्ध उत्तर देने की अपेक्षा करें।
  - **पठित परिच्छेद** के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सटीक हों, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
  - **पाठ आधारित प्रश्नों** के उत्तर मूल पाठ में से बच्चों को ढूँढ़ने को कहें और यह सुनिश्चित करें कि वे उन प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखें।
  - बच्चों को उदाहरण देकर समझाएँ कि जो शब्द सुनने में एक जैसे लगते हैं और जिनके अंतिम वर्ण का उच्चारण एक जैसा होता है, वे तुक वाले शब्द कहलाते हैं।
  - बच्चों को बताएँ कि कुछ शब्दों के अर्थ आपस में एक जैसे अर्थात् मिलते-जुलते होते हैं। इसके लिए कुछ उदाहरण दिए जा सकते हैं, जैसे-अम्मा, माता, दिन, दिवस आदि।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - सूरज के चित्र में रंग भरने में बच्चों की सहायता करें। सूरज से संबंधित कुछ प्रश्न पूछें, जैसे-सूरज हमें क्या-क्या देता है, अगर सूरज न होता तो क्या होता, आदि।